-के. सच्चिदानन्द की कविता

राष्ट्र

राष्ट्र ने मुझसे कहा
तुम मेरे ऋणी हो
हवा के लिए जिसमें तुम सांस लेते हो
पानी के लिए जो तुम पीते हो
खाने की रोटी के लिए
चलने-फिरने की सड़क के लिए
बैठने की ज़मीन के लिए
मैंने राष्ट्र से पूछा
तब जवाब कौन देगा ?
मेरी मां को जिनका गला घोंट दिया गया
मेरी बहन को जिसने ज़हर पी लिया
दादी को जो भीख मांगती भटकती रही
मेरे पिता को जो भूख से मर गए
मेरे भाई को जो तुम्हें आज़ाद कराता हुआ
जेल चला गया
मैं किसी खेमे का नहीं हूं, हवा ने कहा
कोई मेरा मालिक नहीं, पानी ने कहा
मैं जमीन से पैदा हुई, रोटी बोली
मैं सीमाओं की परवाह नहीं करती,
सड़क ने कहा
घस का कोई दोष नहीं होता, ज़मीन ने कहा
तब प्यार के साथ
राष्ट्र ने मुझे ऊपर उठा लिया
गोद में और कहा
अब क्या तुम जानते हो कि राष्ट्र सच्चाई है ?
लहूलुहान गर्दन से गिरता खून
जमीन पर फैल गया
'राष्ट्र की जय हो'

अच्छे दिन आयेंगे.....किसके ?

पेज एक का शेष

तो नेपाल वालों ने हमारी मीडिया और हमारी राहत टीमों को वहां से सबसे पहले भगाया।

म.मो-नेपाल में आपका पहला ज़ोर किस बात पर था, अपने नाम के अलावा ?

मोदी-मैं अपने देश के सैलानियों को बहुत अच्छी तरह जानता हूं। विपदा आने पर वे अमेरिकी या यूरोपीय सैलानियों की तरह स्थानीय लोगों की मदद को तो रूकने वाले हैं नहीं। लिहाज़ा मैंने उनको तुरन्त निकल भागने में मदद की। इस तरह भारत पहुंच कर भी वे मोदी-मोदी ही जपते रहे।

म.मो.- स्वच्छ भारत अभियान का क्या हुआ ? हर तरफ़ गंदगी ज्यों की त्यों है ?

मोदी-गंदगी नहीं रहेगी तो मैं स्वच्छ भारत अभियान चलाऊंगा कैसे ? जब तक मैं प्रधानमंत्री हूं तब तक यह अभियान भी तो चलाना है।

म.मो.-काला धन और लोकपाल का क्या हुआ ?

मोदी-अरे जब बाबा रामदेव और अण्णा हज़ारे चुप बैठे हैं तो तुम मीडिया वाले काहे परेशान कर रहे हो ? हमने हमेशा कहा है कि हमारा ट्रेक रिकार्ड देख लो। मैं 12 साल गुजरात का मुख्यमंत्री रहा हूं। क्या मैंने कभी एक भी भ्रष्टाचारी पकड़ा ? कभी काले धन के ख़िलाफ़ कार्यवाही की ? लोकायुक्त लगाया ?

म.मो.-काश्मीर में पाकिस्तान का झंडा रोज़ाना लहराता हैऔर पाकिस्तान में दाउद इब्राहीम, लखवी व हाफ़िज सईद जैसे आतंकवादी छुट्टे घूम रहे हैं ?

मोदी-तुम मीडियावाले भी हमारे जुमले पकड़ कर बैठ जाते हो। बतौर प्रधानमंत्री हमें विदेश यात्राओं से फुर्सत नहीं, इन बातों का ध्यान पहले भी मीडिया रखता था अब भी वही रखे।

म.मो.-लखवी तो बम्बई आतंकी हमलों का मास्टर माईंड था और अब पाकिस्तानी अदालतों ने इसे ज़मानत दे दी है। ऐसे में आप और आपके शोर मचाने से क्या हासिल होगा ?

मोदी-पाकिस्तानी अदालतों ने तो लखवी को सिर्फ़ जमानत ही दी हैं। हिन्दुस्तानी अदालतें तो टुंडा को हर मामले में बरी कर रही है। तो हिसाब बराबर हो गया न।

म.मो.-रुपया लगातार गिर रहा है, महंगाई बढी जा रही है, न रोज़गार मिल पा रहा है न मकान, न शिक्षा मयस्सर है न चिकित्सा। आपके वादों का क्या हुआ ?

मोदी-ये वादे हमने छोड़े थोड़े ही हैं। अगले चुनाव में फ़िर इन्हीं को ज़ोर-शोर से दोहरा देंगे।

म.मो.-जनता को आप इतना बेवकूफ़ समझते हो मोदी जी ?

मोदी-जिस जनता को यह तक नहीं पता कि अच्छे दिन उसके नहीं मोदी, अमितशाह, अरूण जेटली, अदाणी, अम्बानी के ही आने वाले हैं, उसकी समझ क्या और नासमझी क्या ? शुरू से यही तय था। जनता न समझी तो मैं क्या करूं ?

म.मो.-भ्रष्टाचार के मामले में जय ललिता की रिहाई पर आपको क्या कहना है ?

मोदी-रुपये की कीमत वैसे ही गिर रही थी। अगर जय ललिता रिहा न होती तो पैसे की तो पूछ ही खत्म हो जाती। कुछ भी हो उसके 11 सदस्य भी तो हैं राज्यसभा में।

ईएसआई केवल वसूली करेगा इलाज नहीं

फरीदाबाद (म.मो.)। दिनांक 6 मई को 20 वर्षीय रामकुार की पावर प्रैस पर काम करते हुए दो उंगलियां बुरी तरह से चिथ गयी। सैक्टर-24 के प्लाट नम्बर 15 पर स्थित सेन ऑटोमोटिव कम्पनी वाले अपने इस मजदूर को लेकर तुरन्त ईएसआई निगम के 3 नम्बर स्थित अस्पताल में पहुंचे। सारे रास्ते खून बहता रहा। अस्पताल की कैजुअली में मौजूद डाक्टर पुष्पेन्द्र ने सामान्य ड्रेसिंग व टीका आदि लगाने के साथ एक्सरे व खून आदि की जांच करवाकर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर दी, क्योंकि इससे अधिक कुछ भी कर पाने की विशेष योग्यता उनमें नहीं थी।

जिस हालत में रामकुमार अस्पताल पहुंचा था उस वक्त उसे जरूरत थी हड्डी विशेषज्ञ डाक्टर की जो तुरन्त आपरेशन करके या तो उंगलियों को जोड़ता (जो इस अस्पताल में कदाचित संभव नहीं) या उनको काटकर ठीक से अलग करता। परन्तु इस काम के लिए इस अस्पताल में उस वक्त एक भी डाक्टर उपलब्ध नहीं था और डाक्टर पुष्पेन्द्र के बस का यह काम था नहीं। हां वह इस केस को ई.एस.आई. पैनल वाले किसी अस्पताल में जरूर रैफर कर सकता था जो उसने नहीं किया, क्योंकि ईएसआई अस्पताल में आने वालों को कीड़े-मकौड़ों से अधिक कुछ नहीं समझा जाता।

डाक्टर पुष्पेन्द्र ने रामकुमार को कैजुअली वार्ड में दाखिल करके लिटा दिया और कहा कि बाकी आपरेशन का काम शनिवार नौ तारीख को होगा जब एकमात्र हड्डी विशेषज्ञ छुट्टी से लौट आयेगा। संदर्भवश पाठक जान लें कि इस तरह के आपरेशन में देरी का मतलब होता है पूरे हाथ व शरीर में जहर फैलने का अंदेशा। पहले हाथ कटने की नौबत आती है न काटे जाने पर मरने की नौबत आ जाती है। लेकिन ईएसआई निगम को क्या फ र्क पड़ता यदि उसका पूरा हाथ कटे या वह जान से मरे। यह संवेदनहीनता की परिकाष्ठा नहीं तो क्या है ? इन हालात में रामकुमार के परिजन उसे उठाकर 5 नम्बर स्थित रॉयल नामक एक निजी अस्पताल में ले गये। वहां तुरन्त (इम्प्यूटेशन) आपरेशन किया गया। फीस लगी 8500/- रूपए। उसके बाद से प्रतिदिन 500 रूपए की दवाईयां बाजार से खरीदी जा रही है वे अलग से। नियमानुसार 300 बेड के इस अस्पताल में कम से कम 7 हडडी विशेषज्ञ डाक्टर होने चाहिए। पिछले कुछ दिनों तक जूनियर व सीनियर रेजिडेंट मिलाकर यह गिनती लगभग पूरी कर भी ली गयी थी। लेकिन उनके जाने से करीब एक माह तक भी नये जे.आर. व एस.आर. भर्ती नहीं किये गये। क्योंकि ईएसआई निगम की नीयत में खोट हैं, निगम केवल मजदूरों के वेतन का साढ़े छह प्रतिशत वसूलना जानता है, उनका ईलाज कराना अपना दायित्व नहीं समझता। यदि समझता होता तो यहां हड्डी विशेषज्ञ डाक्टर होते, आपरेशन थियेटर में पूरे उपकरण व साजो सामान होते। इस काम के लिए अस्पताल को मिलने वाला बजट हर साल लैप्स हो जाता है। यानि बजट आता है इस्तेमाल न होने पर वापस चला जाता है। इसी नीति के चलते ईएसआई निगम के खजाने में 40 हजार करोड़ से अधिक रकम जमा हो गयी है और इससे दोगुणी कीमत की परिसम्पतियां खड़ी है।

ऐसा नहीं है कि रामकुमार का यह पहला केस है जो ईलाज के लिए बाहर के (प्राईवेट) अस्पताल में गया हो। जब भी किसी फैक्टरी में कोई दुर्घटना होती है, कोई भी मालिक ई.एस.आई अस्पताल में आने की बजाये प्राईवेट अस्पतालों की और दौड़ता है, ईलाज पर मोटा पैसा भी खर्च करता है क्योंकि वह जानता होता है कि ईएसआई में न डाक्टर है न साजों सामान। रामकुमार की कम्पनी का मालिक या तो कोई टटपूंजियां रहा होगा या अस्पताल की ताजमहल सरीखी नई बिल्डिंग के भलेखे में अपने मजदूर को यहां ले आया। कानूनी रूप से देखा जाये तो रामकुमार के मालिक ने कोई गलती नहीं की थी। जब वह ईएसआई को प्रत्येक श्रमिक के वेतन का साढ़े छह प्रतिशत के हिसाब से हर माह लाखों रूपए देता है तो उसका हक बनता है कि वह अपने मजदूर को वहां से ईलाज भी दिलाये। परन्तु जब वहां से ईलाज नहीं मिला तो उसे मानवीय आधार पर उसका प्राईवेट ईलाज कराना चाहिए था और ईएसआई की इस दादागिरी के विरूद्ध संघर्ष में जुड़ना चाहिए था।

कम्पनी मालिक जब रामकुमार को ईएसआई के भरोसे कैजुअलटी में छोड़कर जाने लगा तो उसके परिजन भड़क गये। मामला कहासुनी से आगे बढ़ने लगा तो कम्पनी मालिक ने 3 नम्बर की पुलिस चौकी के झगड़े की शिकायत की जहां से पूरा मामला इस संवाददाता के संज्ञान में आ पाया वरना यह मामला कभी प्रकाश में न आता।

मालिक ने चोर पकड़ा, पुलिस ने छोड़ा

फ़रीदाबाद (म.मो.) दिनांक 5 मई दोपहर ढाई-तीन बजे के करीब 5 एम/39 मे रहने वाले मनीष बत्रा के घर से गैस सिलेण्डर चोरी हो गया। जब मनीष अपने घर पहुंचा तो देखा कि घर का सामान बिखरा पड़ा है व रसोई में गैस सिलेण्डर नहीं है। घरवालों ने अड़ोस-पड़ोस में रहने वाले लोगों से पूछा तो पता चला कि वहीं ब्लॉक में रहने वाले एक व्यक्ति ने मनीष को बताया कि 5 एल/बलॉक निवासी सुमित तुम्हारे घर से गैस सिलेण्डर उठाकर ले जा रहा था।

तुरंत मनीष व उसका भाई साजन 5 एल ब्लॉक में सुमित के घर पहुंचे। घर पर सुमित शराब के नशे में धुत पड़ा था। मनीष ने सुमित से पूछा कि तुमने मेरे घर से सिलेण्डर चोरी किया है ? सुमित ने सिलेण्डर चोरी की बात कबूल की साथ ही कहा कि मैंने सिलेण्डर किसी को बेच भी दिया है।

मनीष व उसका भाई थाना एनआईटी पहुंचे और प्रभारी को एक लिखित शिकायत दी। एस.आई. सतपाल सिंह ने थाने से पुलिसकर्मी मनीष के साथ सुमित के घर भेजे व उसको थाना ले आए। पूछताछ के बाद सुमित ने सिलेण्डर चोरी की बात एस.आई सतपाल के सामने भी कबूल ली, व उसे बेचने की बात भी। सारी बात सुनने के बाद एस. आई. सतपाल ने मनीष बत्रा से कहा कि वे उसका गैस सिलेण्डर वापिस दिला देगा। लेकिन मनीष चोर के साथ फैसला कर ले लेकिन मनीष ने फैसला करने से इन्कार कर दिया व वापिस अपने घर आ गया।

करीब 4 बजे मनीष को थाना एनआई टी पुलिस ने फ़ोन कर फैसला करने के लिए कहा। मनीष अपने ब्लॉक के एक व्यक्ति के साथ थाना एनआईटी पहुंच गया। मनीष व उसके साथी ने एस.आई. सतपाल सिंह से कहा कि अभी तक आपने मामला दर्ज क्यों नहीं किया ? चोर सुमित शराब के नशे में है आप इसका मेडिकल करवाओ साथ ही उससे पूछो कि उसने चोरी का सिलेण्डर किसको बेचा है। एस.आई सतपाल सिंह ने बड़ी बेर्शमी से कहा कि अगर वह सुमित पर मुकदमा दर्ज करेंगे तो इसकी जिंदगी खराब हो जायेगी। इसके घर में बूढा बाप है वह काफ़ी बिमार है। मैं इसकी गारंटी लेता हूं कि इसने दोबारा चोरी की तो इसपर क़ानूनी कार्यवाही की जायेगी, लेकिन इस दफ़ा इसे माफ़ कर दो।

सतपाल सिंह के इस रवैये को देखकर मजबूरन मनीष ने रात 8 बजे थाना में सुमित के साथ फैसला कर लिया। अब हैरान कर देने वाली बात ये है कि मनीष के घर से भारत कम्पनी का सिलेण्डर चोरी हुआ था लेकिन पुलिस ने मनीष को इण्डेन कम्पनी का गैस सिलेण्डर दिलवाकर फैसला करवा दिया। साथ ही एक लिखित सुमित से करवा ली कि उसने गलती से चोरी कर ली है वे आगे से चोरी नहीं करेगा और न ही कभी उसके ब्लॉक में दिखाई देगा।

हो सकता है कि यह मामला नवनियुक्त थाना प्रभारी के संज्ञान में न हो। लेकिन मातहतों के भरोसे थाना छोड़े रखना भी उचित नहीं। वहीं थाना क्षेत्रवासियों का कहना है कि सभी तरह के अवैध धंधा करने वालों में एस.आई. सतपाल सिंह की अच्छी पैठ है। तमाम अवैध धंधों व धंधा करने वालों को एस आई सतपाल सिंह प्रोत्साहित करता है। शराब तस्करों, सट्टोरियों, सैक्सरैकेट चलाने वालों के साथ अक्सर एस आई सतपाल सिंह को देखा जा सकता है। सूत्रों अनुसार पिछले दिनों बिल्डरों के खिलाफ़ लिखित शिकायत के एक मामले में एस आई सतपाल सिंह ने मोटी रकम वसूल की।

मज़दूर मोर्चा

नियमित रूप से हर माह की पहली व सोलह तारीख को प्राप्त करने के लिए अपने हॉकर से संपर्क करें। कोई दिक्कत होने पर फ़रीदाबाद के पाठक शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर तथा बल्लभगढ़ के पाठक अरोड़ा न्यूज़ एजेन्सी फोन नं 9811477204, करनाल के पाठक अशोक कुमार जैन, फुटवियर जवाहर मार्किट सदर बाजार से फोन नं 9896436739 पर सम्पर्क करें।

1. आनंद मैगजीनल सैंटर केसी रोड, एनएच-5,
2. प्रिंट फोर्ट टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड,
3. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन,
4. रैंक, 45 नीलम चौक,
5. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे,
6. राम खिलावन बल्लभगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने,
7. हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास ।
8. जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207
9. पीपीएच बुक शॉप, नियर सैन्ट्रल लाईब्रेरी, न्यू कैम्पस,जे.एन.यू।
10. स्थानीय अदालतों में : चैम्बर नं. 56-एस.के .जोशी - वकील साहब